अन्तःकरण में तामसी श्रद्धा रहती है। इस श्रद्धा-भेद के कारण ही संसार में नाना मत-मतान्तर प्रचलित हैं। सच्ची धर्म-श्रद्धा तो केवल शुद्धसत्त्व में है; परन्तु अन्तःकरण गुणों से दूषित है, इसीलिए नाना मतों का प्रचलन है। इसी श्रद्धा-भेद के अनुसार उपासना की भी भिन्न-भिन्न पद्धतियाँ हैं।

यजन्ते सात्त्विका देवान्यक्षरक्षांसि राजसाः।
प्रेतान्भूतगणांश्चान्ये यजन्ते तामसा जनाः।।४।।

यजन्ते=पूजते हैं; **सात्त्विकाः**=सात्त्विक मनुष्य; **देवान्**=देवताओं को; **यक्ष-रक्षांसि**=यज्ञ और राक्षसों को; **राजसाः**=राजस मनुष्य; **प्रेतान्**=प्रेतों को; **भूतगणान्**=भूतगणों को; **च**=तथा; **अन्ये**=दूसरे; **यजन्ते**=पूजते हैं; **तामसाः**=तामस; **जनाः**=लोग।

अनुवाद

सात्त्विक मनुष्य देवताओं को पूजते हैं, राजस मनुष्य यक्षराक्षसों को पूजते हैं और तामस लोग भूत-प्रेतगणों को पूजते हैं।।४।।

तात्पर्य

इस श्लोक में श्रीभगवान् ने कर्म-भेद के आधार पर नाना प्रकार की श्रद्धा वाले उपासकों का वर्णन किया है। शास्त्रों का विधान है कि एकमात्र श्रीभगवान् ही उपास्य हैं; परन्तु जो शास्त्रों में पारंगत अथवा श्रद्धावान् नहीं हैं, वे अपने प्राकृतिक गुणों के अनुसार नाना प्रकार के लक्ष्यों को पूजते हैं। सात्त्विक पुरुष सामान्यतः ब्रह्मा, शिव, सूर्य, चन्द्रमा, इन्द्र आदि देवताओं को पूजते हैं। देवता अनेक हैं; सात्त्विक पुरुष अपनी कामना के अनुरूप उन्हें पूजते हैं। ऐसे ही, राजस मनुष्य असुरों की उपासना करते हैं। हमें स्मरण है कि द्वितीय विश्वयुद्ध के समय कलकत्ता में एक मनुष्य ने हिटलर की पूजा की थी, क्योंकि युद्ध के कारण उसने काला बाजारी से बहुत धन कमाया था। ये राजस मनुष्य किसी शक्तिशाली मनुष्य को ही ईश्वर बना लेते हैं। उनके विचार से किसी को भी ईश्वर समझ कर पूजा जा सकता है, जिससे वही फल होगा।

श्लोक में स्पष्ट है कि तामस व्यक्ति भूत-प्रेतगणों को पूजते हैं। ऐसे व्यक्ति कभी-कभी किसी मृत मनुष्य की चिता को भी पूजते हैं। मैथुन-सेवा इसी तामसी श्रेणी में आती है। अनेक ग्रामों में प्रेतों के उपासक होते हैं। बहुत से वृक्ष प्रेत-निवास के रूप में प्रसिद्ध हैं; निम्न वर्ग के लोग उनके लिए पूजन और यजन करते हैं। ये नाना प्रकार की पूजन-पद्धतियाँ वास्तव में भगवत्-उपासना नहीं हैं। भगवत्-उपासना वही कर सकते हैं, जो शुद्धसत्त्व में हैं। श्रीमद्भागवत में कहा है, **सत्त्वं विशुद्धं वसुदेव शब्दितम्।** 'शुद्धसत्त्व में स्थित मनुष्य भगवान् वासुदेव का भजन करता है।' तात्पर्य यह है कि जो प्रकृति के गुणों से बिल्कुल मुक्त होकर शुद्धसत्त्व में स्थित हो गए हैं, वे भगवद्भजन कर सकते हैं।

निर्विशेषवादियों को सत्त्वगुण में स्थित समझा जाता है। वे पंचदेवों की